

هينءى سه ٲءو سهيځيه

ءاٲ نوسل هسن هاشمي

هينءى سه اردو سهيځيه

ءاڪٽرنورالحسن هاشمي

ٲٲ ٲٲ ٲءو اكاءمي لائن

اٲرٲرءيش اردو اءمي، لڪهنو

हिन्दी से उर्दू सीखिये

डा० नूरुल हसन हाशमी

ہندی سے اردو سیکھئے

ڈاکٹر نور الحسن ہاشمی

ڈ० پ० اردو اکادمی لکھنؤ

اتر پردیش اردو اکادمی، لکھنؤ

दो शब्द

उ० प्र० उर्दू अकादमी उर्दू भाषा के प्रचार प्रसार एवं विकास की निरन्तर कोशिश कर रही है। अकादमी ने प्रदेश में लगभग पांच दर्जन उर्दू कोचिंग सेंटर स्थापित किये हैं, जहां उर्दू पढ़ने के इच्छुक व्यक्तियों को उर्दू पढ़ाई जा रही है।

उर्दू ऐसी लोक प्रिय भाषा है जिसे बिना पढ़े लिखे भी लोग समझते और बोलते हैं। उर्दू लिखने पढ़ने के लिए इसके रस्मुल खत (लिपि) का ज्ञान अति आवश्यक है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए अकादमी ने कई वर्ष पूर्व "हिन्दी से उर्दू सीखिये" पुस्तक प्रकाशित की थी, जिसका छठा संस्करण आपके हाथों में है।

डा० नूरुल हसन हाशमी उर्दू के महान सहित्यकार एवं आलोचक थे। उन्होंने हिन्दी के माध्यम से उर्दू सिखाने के लिए खास तौर से 'हिन्दी से उर्दू सीखिये' पुस्तक लिखी थी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक हिन्दी क्षेत्रों में उर्दू को विकसित करने में अहम भूमिका अदा करेगी। इसके माध्यम से बड़ी संख्या में लोग उर्दू सीख सकेंगे।

उ० प्र० उर्दू अकादमी
गोमती नगर
लखनऊ

डा० नवाज़ देवबन्दी
चेयरमैन

اُتر پردیش اُردو اکادمی © اردو اکادمی 30 اردو

ہندی سے اردو سیکھیے

ڈاکٹر نور الحسن ہاشمی

ہندی سے اردو سیکھیے

ڈاکٹر نور الحسن ہاشمی

چھٹا ایڈیشن 2015

چھٹا ایڈیشن

تعداد پانچ ہزار 5000

تعداد پانچ ہزار

قیمت پچیس روپے Rs. 25.00

قیمت پچیس روپے

اس0 ریجنل، سچل 30 اردو اکادمی نے مہ0 ایمپریشن پرنٹ ہاؤس، لائٹس روڈ لکھنؤ سے
چھپوار کر کارال 30 اردو اکادمی سٹلٹ لکھنؤ، گومتی نگر، لکھنؤ سے پکاشل کلا

اے۔ رضوان، سکرلٹری اُتر پردیش اردو اکادمی نے ماسٹرس امپریشن پرنٹ ہاؤس، لائٹس روڈ، لکھنؤ سے

چھپوا کر دفتر اردو اکادمی واقع دھوتی کھنڈ، گومتی نگر، لکھنؤ سے شائع کلا۔

हिन्दी	अक्षर का नाम	उर्दू अक्षर	नं०	हिन्दी	अक्षर का नाम	उर्दू अक्षर	नं०
फ	फे	ف	२६	अ	अलिफ	ا	१
क	काफ	ق	२७	ब	बे	ب	२
क	काफ	ک	२८	प	पे	پ	३
ग	गाफ	گ	२९	त	ते	ت	४
ल	लाम	ل	३०	ट	टे	ث	५
म	मीम	م	३१	स	से	ش	६
न	नून	ن	३२	ज	जीम	ج	७
व	वाव	و	३३	च	चे	چ	८
ह	हे	ه	३४	ह	हे	ح	९
ह	दोहरी हे	ھ	३५	ख	खे	خ	१०
अ	हमजा	ء	३६	द	दाल	د	११
य	छोटी ये	ی	३७	ड	डाल	ڈ	१२
य	बड़ी ये	ے	३८	ज	जाल	ژ	१३
				र	रे	ر	१४
				ड	डे	ڑ	१५
				ज	जे	ز	१६
				ज	जे	ژ	१७
				स	सीन	س	१८
				श	शीन	ش	१९
				स	सुवाद	ص	२०
				ज	जुवाद	ض	२१
				त	तो	ط	२२
				ज	जो	ظ	२३
				अ*	अैन	ع	२४
				ग	गैन	غ	२५

नोट :-

1. अक्षर नं० १७ का प्रयोग बहुत ही कम शब्दों के लिये होता है। यह फारसी से लिया गया है। और तमिल भाषा में भी है।
2. अक्षर नं० १८ और १९ में 'सीन' और 'शीन' दो तरह से लिख सकते हैं।
3. अक्षर नं० ३५ "दोहरी हे" (या, दोचश्मी 'हे') का प्रयोग आगे बताया जायेगा।
4. अक्षर नं० ३६ हमजा वास्तव में कोई अक्षर नहीं है बल्कि एक तरह का चिन्ह है जो अक्षर नं० ३३, (و) ३७ (ی) और ३८ (ے) के साथ मिलकर कोई मात्रा का काम देता है जैसा कि आगे बताया जाएगा।

* यह अक्षर 'अ' (ع) विभिन्न मात्राओं के साथ प्रयोग होता है। उदाहरण आगे मिलेंगे।

हिन्दी से उर्दू सीखिये

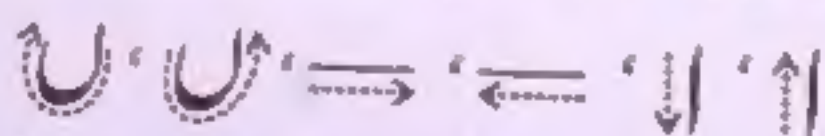
उत्तरी भारत में जो भाषा बोली जाती है उसे उर्दू वाले उर्दू कहते हैं और हिन्दी वाले हिन्दी। मगर वास्तव में वह हिन्दुस्तानी है जिसके लिए गांधी जी ने बल देकर कई दफा कहा और लिखा था कि हिन्दी और उर्दू दोनों लिखावटों में लिखना और पढ़ना जानना चाहिए परन्तु अब बहुत से हिन्दी वाले उर्दू लिखावट नहीं जानते। इसलिए जो लोग इस उर्दू लिखावट का रूप सीखना चाहते हैं उनके लिए यह पुस्तक विशेषकर छपवाई जा रही है। आशा है कि वे इसे बड़ी सावधानी से सीख लेंगे इस लिए कि उन्हें कोई दूसरी भाषा नहीं सीखनी होगी (जैसे, अंग्रेजी, बंगाली, गुजराती, मराठी या तमिल आदि जिसमें उत्तरी भारत वालों को भाषा भी सीखनी पड़ती है और उसकी लिपि भी)।

यहां तो बोलचाल की भाषा एक ही है केवल लिपि सीखना होगी। और कोई लिपि हो थोड़े अभ्यास से आ जाती है और जब लिखावट आ जायेगी तो उर्दू साहित्य को भी आसानी से पढ़ और समझ सकेंगे।

उर्दू लिपि की दो विशेषताएं हैं। (1) यह दाएं से बाएं लिखि और पढ़ी जाती है। (2) इसमें अधिकतर शब्द मिलाकर लिखे जाते हैं अर्थात् अक्षरों को छोटा करके एक दूसरे से मिला देते हैं।

उर्दू भाषा में 38 अक्षर होते हैं। जिनमें से अधिकतर तो वही हैं जो हिन्दी में प्रचलित हैं (हां उनके नाम दूसरे हैं) और थोड़े से अरबी और फ़ारसी से लिए गए जो आगे बताए जाएंगे।

उर्दू अक्षर अधिकतर सीधी लकीरों और गोल लकीरों से बनाए जाते हैं। यह लकीरें ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर दाएं से बाएं या बाएं से दाहिनी ओर हो सकती हैं और गोल आकार भी दाएं से बाएं या बाएं ओर से दाएं ओर होते हैं, जैसे—



उर्दू के कई अक्षरों में एक, दो या तीन बिन्दु ऊपर, नीचे या बीच में लगाए जाते हैं जिसके कारण एक जैसा लिखा हुआ अक्षर दूसरा अक्षर बन जाता है। बिन्दुओं के अतिरिक्त (b) चिन्ह का प्रयोग ट, ड और ङ लिखने में किया जाता है।

ये सब बातें दूसरे पृष्ठ पर दी हुई उर्दू अक्षरों की सूची से स्पष्ट हो जाएंगी।
नोट:— इन अक्षरों को कई बार लिख-लिखकर भली-भांति पहचान लीजिए तब आगे बढ़िये।

हुए जोड़ देते हैं। उसे हिन्दी की तरह अलग से नहीं लगाते, जैसे—

(आ)	ا = 1 + ع	(बा)	با = 1 + ب
(का)	كا = 1 + ك	(जा)	جا = 1 + ج
(मा)	ما = 1 + م	(सा)	سا = 1 + س
(ला)	لا = 1 + ل	(ज़ा)	زا = 1 + ض

- 5) "ऊ" का सुर लाने के लिए "و" (अक्षर) पर उल्टे "पेश" (ء) का चिन्ह लगाया जाता है, जैसे—

ऊन اُون , दूर دُور , पूरा پُورا , जूट جُوت , बूट بُوت

यहाँ پ-ج-ب को छोटा करके अक्षर (و) में जोड़कर उन पर उल्टा पेश (ء) लगा दिया गया है 'अलिफ़' (ا) और 'दाल' (و) पूरे लिखे गये हैं जैसे कि 4 (ii) में बतलाया जा चुका है कि यह अक्षर जब किसी शब्द के आरम्भ में आते हैं तो पूरे लिखे जाते हैं।

- (6) "ओ" की आवाज़ की मात्रा के लिए भी अक्षर (و) का प्रयोग करते हैं। उसे ओ (و) का चिन्ह माना जाता है।

जैसे—(डोर) دُور , (डोल) دُول , (मोर) مور , (चोर) چور

(ओस) اوس , (दो) دو , (शोर) شور , (जोर) زور

यहाँ भी ا-م-ج को छोटा करके अक्षर (و) में जोड़ दिया गया है अलिफ़ (ا), दाल (و), डाल (د), और जे (ج), 4(ii) की तरह अक्षर वाव (و) में जोड़े नहीं जाते।

- (7) "औ" के सुर के लिए अक्षर वाव (و) के ऊपर ज़बर (ز) की मात्रा लगा देते हैं और उसे "ौ" की मात्रा समझा जाता है, जैसे—

(और) اور , (दौड़ा) دوڑا , (चौड़ा) چوڑا , (कौन) کون

(नौ) نو , (सौ) سو

यहाँ भी अक्षर ک, ج, س और ن को छोटा करके अक्षर वाव (و) में मिला दिया गया है।

मात्राएँ

(1) उर्दू में चार शेष मात्राओं के चिन्ह यह हैं :-

(/) यह टेढ़ी लकीर का छोटा सा चिन्ह जब किसी अक्षर के ऊपर लगाया जाता है तो "अ" का सुर उस अक्षर में मिल जाता है। जैसे हिन्दी में "ब" को "बा" पढ़ते हैं उसमें कोई चिन्ह लगाने की आवश्यकता नहीं होती। उर्दू में जब "ब" के ऊपर यह चिन्ह लगा दिया जाएगा तब (ب) उसे "ब" पढ़ सकेंगे। इसी तरह ज = ج , ल = ل , म = م , आदि। इस चिन्ह को "ज़बर" कहते हैं।

(2) (\) यही टेढ़ा छोटा चिन्ह जब किसी अक्षर के नीचे लगाया जाए तो उसे "जेर" कहते हैं और उस अक्षर में "इ" का सुर मिल जाता है जैसे— बि = بـ , जि = جـ , लि = لـ , मि = مـ , आदि।

(3) (۝) इस चिन्ह को "पेश" कहते हैं। यह जिस अक्षर के ऊपर लगा दिया जाता है उस अक्षर में "उ" का सुर सम्मिलित हो जाता है जैसे— बु = ب۝ , जु = ج۝ , लु = ل۝ , मु = م۝ , आदि।

(4) "आ" का सुर लाने के लिए —

(i) अगर वह अलिफ़ (ا = अ) के साथ आता है तो उसके ऊपर यह चिन्ह (~) लगा दिया जाता है (इसे "मद" कहते हैं) जैसे आग = آگ , आम = آم , आज = آج , आस = آس , आदि।

(ii) अगर यह सुर, द, ड, ज़, र, ङ, ज, द (د , ز , ج , ر , ڈ , د) के पश्चात आता है तो उनके आगे पूरा अलिफ़ लिख दिया जाता है जैसे— दा = دا , डा = डा , रा = را , वा = وا , राम = رام , रात = رات , दवा = دوا , आदि।

(iii) अन्य दूसरे अक्षरों के पश्चात अगर "आ" का सुर लाया जाए तो मूल अक्षर को छोटा करके उसमें अलिफ़ (ا) का चिन्ह नीचे से ऊपर ले जाते

ऊपर ज़बर (-) का चिन्ह बना देते हैं और कभी नहीं भी बनाते, समझ लेते हैं और (<) के नीचे दो बिंदियाँ अधिकतर नहीं लगाते, जैसे :-

(है) < (मै) < (कै) < (शै) < (जै) < (बै) < (ऐ) <

(ii) अगर यह मात्रा बीच शब्द में आए तो बड़ी ये (<) को 8(ii) और 9(ii) की तरह छोटा करके बीच में जोड़ देते हैं और उसके ऊपर ज़बर (-) लगा देते हैं और कभी नहीं लगाते, समझ लेते हैं, जैसे -

(मैल) میل = ل + < + م (कैसा) کیا = ا + س + < + ک
(हैट) ہیٹ = ت + < + و (बैर) بیر = ر + < + ب

नोट :-

1- उर्दू अक्षरों की दी हुई सूची में आपने देखा होगा कि कुछ अक्षरों के सुर एक जैसे हैं, जैसे

(अ) स	=	ث، س، ص
(ब) ज	=	ذ، ز، ض، ظ
(स) त	=	ت، ط
(द) अ	=	ا، ع، ء
(य) हे	=	ه، ح

(अ) इस खण्ड में अधिकतर प्रयोग 'س' का होता है, 'ث' और 'ص' कुछ अरबी शब्दों के साथ आते हैं जो उर्दू में सम्मिलित हैं। हिन्दी के शब्दों में केवल 'س' का प्रयोग है।

(ब) यह अक्षर अरबी/फ़ारसी से उर्दू में आए हैं और अरबी/फ़ारसी के शब्दों ही में उनका प्रयोग होता है।

(स) यह दोनों अक्षर अरबी/फ़ारसी में भी हैं परन्तु हिन्दी शब्दों में केवल 'ت' का प्रयोग है।

(द) "ع" अरबी/फ़ारसी शब्दों में आता है " " तो एक प्रकार का चिन्ह है जो, "ا، ع، ء" के साथ मिलकर अ, ई, ए की मात्रा का सुर निकालता

(8) "ई" के सुर के लिए उर्दू में हिन्दी की मात्रा "ी" की तरह कोई चिन्ह नहीं है।

(i) उर्दू में यह सुर जिस शब्द या अक्षर के साथ आता है उसके अन्त में (۱) का अक्षर लगा देते हैं या जोड़ दिया जाता है। कभी उसके साथ "जेर" (/) का चिन्ह उसके नीचे लगा देते हैं और कभी नहीं भी लगाते और अधिकतर छोटी (۱) के नीचे कोई बिन्दी नहीं लगाते, जैसे —

(फी) فی (शी) شی (री) ری (दी) دی (जी) جی (बी) بی (ई) ۱
(ही) ہی (ली) لی (की) کی यहाँ भी ہ-ل-ک-ش-ج-ب को छोटा करके " ۱ " में मिला दिया गया है।

(ii) यह मात्रा अगर बीच शब्द में आए तो बीच ही में "य" (۱) को छोटा करके जोड़ देते हैं और "य" (۱) के नीचे दो बिन्दु लगा देते हैं, जैसे—

(टीन) ٹین = ن + ۱ + ت (खीर) کھیر = ر + ۱ + ک (पीर) پیر = ر + ۱ + پ

(9) "ए" के लिए भी उर्दू में कोई अलग चिन्ह हिन्दी की मात्रा (۲) के समान नहीं है बल्कि वह सुर जिस शब्द या अक्षर के साथ आता है उसके अंत में बड़ी "ये" (۲) का अक्षर लगा दिया या जोड़ दिया जाता है। कभी उसके नीचे जेर (/) का चिन्ह बना देते हैं और कभी नहीं भी बनाते हैं और अधिकतर इस बड़ी "ये" (۲) के नीचे दो बिंदियाँ नहीं लगाते, जैसे —

(गे) گے (से) سے (ले) لے (दे) دے (जे) جے (बे) بے (ए) اے

(ii) यह मात्रा अगर बीच शब्द में आए तो 8(ii) की तरह बीच शब्द में " ۲ " को छोटा करके जोड़ देते हैं और उसके नीचे दो बिंदियाँ बना देते हैं, जैसे—

(लेना) لینا = ا + ن + ۲ + ل (बेटा) بیٹا = ا + ت + ۲ + ب (मेरा) میرا = ا + ر + ۲ + م

(भेद) بھید = د + ۲ + ہ (देना) دینا = ا + ن + ۲ + د (तेरा) تیرا = ا + ر + ۲ + ت

(10) (i) "ऐ" के लिए भी हिन्दी की मात्रा (۳) के समान उर्दू में कोई चिन्ह नहीं है। अक्षर के अंत में बड़ी "य" (۲) लगाकर या जोड़कर उसके

4- जहाँ “नून” (ن) का सुर नाक से निकलता है वहाँ ن के अन्दर की बिन्दी नहीं लगाते जब यह अक्षर किसी शब्द के अन्त में आये, जैसे

ن (मों) ہاں (हों) ہیں (हैं) نہیں (नहीं)
(और उदाहरण आगे आएंगे)

परन्तु जब यह बिना बिन्दु वाला अक्षर किसी शब्द के दो या तीन अक्षरों के बीच में आ जाये तो बिन्दु लगा देते हैं और उसके ऊपर (و) का चिन्ह लगा देते हैं और कभी यह चिन्ह नहीं लगाते मगर पढ़ते (ا) के सुर से है जैसे—

(ऑच) آ = ا + و + آ (जग) جگ = گ + و + ج (रग) رگ = گ + و + ر

अक्षरों की मिलावट

पहले बताया जा चुका है कि उर्दू के अक्षरों को छाटा करके जोड़ा जाता है चाहे यह किसी के आरम्भ में आए या बीच में या अन्त में। उनके अक्षरों को किये जाते हैं उनका ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है। उर्दू अक्षर अपने आकार के अनुसार इस अनुक्रम में लिखे जा सकते हैं —

ا، د، ڈ، ذ، ر، ژ، ز، و	= 1
ب، پ، ت، ث، ث	= 2
ج، چ، ح، خ	= 3
س، س، ش، ش، ص، ض	= 4
ط، ظ	= 5
ع، غ	= 6
ف، ق	= 7
ک، گ	= 8
ل، م، ن	= 9
ه، و	= 10
، ،	= 11
ی، ی	= 12

ऊपर के हर ग्रुप का विवरण अलग-अलग क्रम अनुसार इस प्रकार है —

है, जैसे— (गऊ) گُ (गई) گِ (गए) گے

(य) यह दोनों अक्षर अरबी और फारसी में भी हैं। हिन्दी शब्दों में केवल (ह) का प्रयोग होता है।

इस तरह आप देख सकते हैं कि उर्दू में हिन्दी की अपेक्षा कुछ अक्षरों के सुर अधिक हैं।

2- अक्षरों की दी हुई सूची में नं० 35 पर एक अक्षर "दोहरी" د "हे" (या दो चश्मी "हे") के नाम से है। यह वास्तव में एक अक्षर नहीं है। केवल एक चिन्ह है जो हिन्दी के उन अक्षरों में लगाया जाता है जिन में "ह" का सुर जोड़ना पड़ता है।

हिन्दी में (म्ह, न्ह, ल्ह को छोड़कर) उसके लिये अलग अक्षर होता है परन्तु उर्दू में उसे मूल अक्षर को छोटा करके उसमें د जोड़ देते हैं, जैसे—

ध = دھ = د + ه ख = کھ = ک + ه घ = گھ = گ + ه

च = چھ = چ + ه ढ = دھ = د + ه थ = تھ = ت + ه

ढ = دھ = د + ه भ = بھ = ب + ه फ = فھ = ف + ه

झ = जھ = ج + ه छ = چھ = چ + ه ल्ह = لھ = ل + ه

म्ह = مھ = م + ه न्ह = نھ = ن + ه

3- तशदीद = जहाँ कही किसी अक्षर की आवाज दो दफा निकलती है तो हिन्दी में उस अक्षर में उससे पहले उसी अक्षर का आधा अक्षर जोड़ कर दोहरी आवाज निकाली जाती है, जैसे— बिल्ली, कुत्ता, कच्चा, मिट्टी आदि— उर्दू में उसी अक्षर के ऊपर (و) का चिन्ह बना देते हैं, उसे "तशदीद" कहते हैं। जैसे—

कुत्ता = کُتّا = ک + ت + ت + ا

बिल्ली = بِلّی = ب + ل + ل + ی

सच्चा = سچّا = س + چ + چ + ا

लट्टू = لٹّو = ل + ٹ + ٹ + و

चक्की = چکّی = چ + ک + ک + ی

दूसरे ग्रुपों के अक्षर जब और ग्रुपों के आरम्भ, बीच या अन्त में आते हैं तो क्रमशः उनका छोटा आकार इस प्रकार हो जाता है -

अन्त में	बीच में	आरम्भ में	अक्षर	
ا	ا	ا	ا	= १
ب	ب	ب	ب, پ, ت, ث, ث	= २
ج	ج	ج	ج, ح, خ, ح, ح	= ३
د	د	د	د, ذ, ذ, ذ, ذ	= ४
هـ	هـ	هـ	هـ, ط, ط, ط	= ५
ز	ز	ز	ز, ع, ع, ع	= ६
ح	ح	ح	ح, ق, ق, ق	= ७
ك	ك	ك	ك, گ, گ	= ८
ل	ل	ل	ل, م, م, ن	= ९
و	و	و	و	= १०
—	—	—	—	= ११
ي	ي	ي	ي, ي, ي	= १२

नोट :- ا और ب जब अलिफ (ا) या लाम (ل) से मिलते हैं तो उनका छोटा आकार (ا) और (ب) और (ل) या (ل) हो जाता है। अब ऊपर लिखे हुए जोड़ों के उदाहरण नीचे लिख जा रहे हैं -

दो अक्षरों के शब्द

घुन : $\text{غُن} = \text{ن} + \text{غ}$ चढ़ : $\text{حِز} = \text{ز} + \text{ح}$ आप : $\text{أَنتَ} = \text{ت} + \text{أ}$
 धन : $\text{دِهْن} = \text{ن} + \text{د}$ घर : $\text{بَیْت} = \text{ت} + \text{ب}$ आज : $\text{آج} = \text{ج} + \text{آ}$

इस ग्रुप के अक्षर जब किसी शब्द के आरम्भ में आते हैं या इसी ग्रुप में एक दूसरे के साथ लिखे जाते हैं तो पूरे लिखे जाते हैं, छोटा करके किसी अन्य अक्षर में जोड़े नहीं जाते। परन्तु जब ये किसी दूसरे अक्षर के अन्त में आएंगे तो उसमें निम्नलिखित ढंग से मिला दिये जाएंगे।

(अ) जब अलिफ (ا) अन्त में आए :-

(ता) تا = ا + ت (सा) سا = ا + س (जा) जा = ا + ج (बा) बा = ا + ب
 (का) का = ا + ک (का) का = ا + ق (फा) فا = ا + ف (आ) आ = ا + ع
 (गा) गा = ا + گ (हा) हा = ا + ه (ना) ना = ا + ن (मा) मा = ا + م

(ब) जब د, ذ, و अन्त में आए :-

(जिद) جد = د + ج (सद) سد = د + س (जद) جد = د + ج (बद) بد = د + ب
 (गिद्ध) گد = د + گ (कद) கட = द + क (कद) قد = د + ق (गद) غد = د + غ
 (यद) يد = د + ی (रसद) رسد = د + س + ر (मदद) مدد = د + د + م (वलद) ولد = د + ل + و

(स) जब ز, ذ, و किसी अक्षर के अन्त में मिले -

(फर) فر = ر + ف (सिर) سر = ر + س (जड) جذ = ز + ج (पर) پر = ر + پ
 (हर) هر = ر + ه (नर) نر = ر + ن (मुड) مڑ = ز + م (घर) گھر = ر + گھ

(द) वाव (و) का जोड़ जब यह किसी अक्षर के अन्त में हो :-

(ला) لو = و + ل (धो) دھو = و + ه (जा) جو = و + ج (जो) جو = و + ج (बू) بू = و + ب
 (यो) یو = و + ی (हु) هو = و + ه (हो) هو = و + ه (को) کو = و + ک (शोर) شور = و + ر + ش

नोट :- आपने देखा कि " و " जब किसी अक्षर के अन्त में मिलता है तो वह و या لو का आकार ले लेता है।

ب+و = بد -	گ+ل = گل -	پ+ی = پی = پی	**پی =
ج+و = جد -	ب+م = بم -	ج+ی = جی =	جی =
ح+ز = حذ -	ث+م = ثم -	ح+ی = گھی =	غی =
ق+د = قد -	ک+م = کم -	ک+ی = کی =	کی =
پ+ر = پر -	گ+م = گم -	ر+ی = ری =	دی =
ا+ز = از =	ه+م = هم -	ه+ی = بھی =	भी =
ج+ز = جڑ =	د+ے = دے =	ل+ی = لی =	لی =
	ک+ے = کے =	ل+ے = لے =	لے =

* پڑھنے سے کبھی کی کی آواز نکلتی ہے۔

** کے نیچے دو ہندیاں अधिकतर نہیں لگاتے ہیں،
 دو اکشروں کے वाक्य

آم کھا لے =	آم کھا لے =	اُس نے کھانا کھایا =	اُس نے کھانا کھایا =
سچی سچی کہہ =	سچی سچی کہہ =	گڑبڑ نہ کر =	گڑبڑ نہ کر =
چپست پر چڑھ =	چپست پر چڑھ =	وہ آیا تھا =	وہ آیا تھا =
خط لکھ =	خط لکھ =	یہ پھل ہے =	یہ پھل ہے =
اب سوزہ =	اب سوزہ =	وہ خط پڑھ =	وہ خط پڑھ =
شک مت کر =	شک مت کر =	آج جا کل آ =	آج جا کل آ =
تو کب آیا =	تو کب آیا =	مجھ کو دے دے =	مجھ کو دے دے =
رس پی لو =	رس پی لو =	گم غم مت رہ =	گم غم مت رہ =
دس تک گن =	دس تک گن =	پل پر جا =	پل پر جا =
بس اب چپ رہ =	بس اب چپ رہ =	نل کا پانی پی لے =	نل کا پانی پی لے =

धुन = धुन = न + ध	डर = डर = र + ड	आस = आस = स + आ
सुन = सुन = न + स	हर = हर = र + ह	आग = आग = ग + आ
गिन = गिन = न + ग	इस = इस = स + इ	आम = आम = म + आ
बो = बो = व + ब	उस = उस = स + उ	आन = आन = न + आ
बू = बू = व + ब	बस = बस = स + ब	आह = आह = ह + आ
तो = तो = व + त	दस = दस = स + द	अब = अब = ब + अ
तू = तू = व + त	रस = रस = स + र	तब = तब = ब + त
जो = जो = व + ज	बत = बत = त + ब	जब = जब = ब + ज
दो = दो = व + द	खत = खत = त + ख	सब = सब = ब + स
सो = सो = व + स	सफ = सफ = फ + स	ढब = ढब = ब + ड
सौ = सौ = व + स	हक = हक = क + ह	था = था = ह + त
लो = लो = व + ल	दिक = दिक = क + द	थी = थी = य + त
नौ = नौ = व + न	बक = बक = क + ब	तुझ = तुझ = ज + त
हो = हो = व + ह	शक = शक = क + श	मुझ = मुझ = ज + म
कह = कह = ह + क	बल = बल = ल + ब	जज = जज = ज + ज
*किह = किह = ह + क	चल = चल = ल + च	हज = हज = ज + ह
वह = वह = व + व	कल = कल = ल + क	सच = सच = च + स
यह = यह = य + य	का = का = क + क	बच = बच = च + ब

तीन अक्षरों के वाक्य

जो कहो वही करो	=	جو کہو وہی کرو
जिसके पास अकल है वह बड़ा	=	جس کے پاس عقل ہے وہی بڑا
घड़ी में बज रहा	=	گھڑی میں بجے ہیں؟
खाओ पिया मज करा	=	کھاؤ پیو مزے کرو
मगर जुम न करा	=	مذہب نہ کرو
खुदा से दुआ है	=	خدا سے دعا ہے
कि जुम सुरा रहा	=	کہ تم خوش رہو
यही बात मन कही थी	=	یہی بات میں نے کہی تھی
रोक लो गर गलत चल पाइ	=	روک لو گر غلط چلے کوئی
बख्श दो गर खता कर मोर	=	بخش دو گر خطا کرے کوئی
बाग में फूल खिले हैं	=	باغ میں پھूल کھले ہیں
फूल सुख और जर्द हैं	=	چہنار سرخ اور زرد ہیں
कली का न ताड़ो*	=	کلی نہ تڑو
एक सब खा लो	=	ایک سب کھا لو
वह ताश खेल रहे हैं।	=	وہ تاش کھیل رہے ہیں
मार नाच रहा है	=	مور ناچ رہا ہے
दूध पी कर सा रहा	=	دودھ پی کر سوراہا
जो वक्त बात गया सो गया	=	جو وقت بیت کیا سو گیا
क्या पेट में दर्द हुआ ?	=	کیا پیٹ میں درد ہوا؟
कुछ काम की बात करा	=	کچھ کام کی بات کرو

* उर्दू में ना की है (१) का अर्थ है नाचना

(देखो पृष्ठ 23. नियम (1))

तीन अक्षरों के शब्द

जाओ = जाؤ = ج+ا+و	लाल = لال = ل+ا+ل	बाप = बाप = ب+ا+پ
लाये = लाँ = ل+ا+ئ	अगर = اگر = ر+ا+گ	बात = बात = ت+ا+ب
खाओ = खाؤ = کھ+ا+و	मगर = مگر = ر+ا+م	जाट = जाٹ = ج+ا+ٹ
पियो = प्यो = پ+ی+و	नाम = نام = ن+ا+م	रात = रात = ت+ا+ر
वक्त = وقت = و+ق+ت	मोर = مور = م+و+ر	सात = سات = ت+ا+س
सख्त = سخت = س+خ+ت	वही = وہی = و+ہ+ی	ताज = تاج = ت+ا+ج
सब्ज = سبز = س+ب+ز	हार = ہار = ہ+ا+ر	ताश = تاش = ت+ا+ش
सुख = سرخ = س+ر+خ	हरा = ہرا = ہ+ا+ر	पास = پاس = پ+ا+س
जुर्म = جرم = ج+ز+م	हवा = ہوا = ہ+و+ا	साफ = صاف = ص+ا+ف
चचा = چچا = چ+چ+ا	एक = ایک = ا+ے+ک	तेज = تیز = ت+ے+ز
फूल = پھूल = ف+و+ل	भला = بخدا = ب+ل+ا	शेर = شیر = ش+ے+ر
क्या = کیا = ک+ی+ا	यही = یہی = ی+ہ+ی	खुदा = خدا = خ+و+ا
किया = کیا = ک+ی+ا	पहली = پہلی = پ+ہ+ی	दुआ = دعا = د+ع+ا
दूध = دودھ = د+و+د	मुह = منہ = م+ن+ہ	सब्र = صبر = ص+ب+ر
खीर = क्हीर = ख+ी+र	घड़ी = گھڑی = گ+ھ+ڑ+ی	अलम = علم = ا+ل+م
नाक = नाक = न+ा+क	कान = کان = ک+ا+ن	इल्म = علم = ع+ل+م
कलम = قلم = क+ल+म	कली = क्ली = क+ली+य	गई = گئی = گ+ی+ء
गया = گیا = گ+ے+ا	दर्द = درد = د+ر+د	जर्द = زرد = ز+ر+د
काम = کام = क+ा+म		

شراب پینا بُری بات ہے
 توتے کے چنگھ ہرے ہوتے ہیں
 یہ اندر رکتا ہے
 دُست ہو تو یہ قتلہ سُنو
 اُس کا مکان بہت پُرانا ہے
 اس کتاب کی کیا قیمت ہے
 دُنیا میں ہل چل چکی ہے
 وہ ابھی دُکان کی ظُرف جاتے تھے
 خوشی سے وہ لڑکا زور سے ہنسا
 تاج محل دیکھ کر خیرت ہوتی ہے
 جب چاند نکلا تارے ماند پڑ گئے
 ہاتھی سب سے بڑا جانور ہے
 سب دوست ہیں اپنے مطلب کے
 دُنیا میں کسی کا کوئی نہیں
 آم سب سے اچھا پھل ہے
 اُس کا چہرہ چاند جیسا ہے
 ننھا پودھا زمین سے نکلا
 جوٹا اور موزے پہن لو
 مسجد میں نماز پڑھتے ہیں
 مندر میں مورت کے درشن ہوتے ہیں
 ٹنڈا پانی پی لو
 یہ راستا کہاں جاتا ہے
 چمھر کا تپا ہے
 میرے ساتھ ساتھ دوڑو
 رستہ میں حمل ہوتا فینڈہاں
 صبح اٹھنا صحت کے لئے اچھا ہے

चार अक्षरों के शब्द

اُ + ر + و + و = اُردو = ش + ر + ا + ب = شراب = ش + ر + ا + ب = آکھ = آکھ = آکھ = آکھ
ع + ر + ب + ی = عربی = ح + ر + ا = صحرا = ج + ا + ب + و = چاند = چاند = چاند = چاند
و + ن + د + ی = ہندی - ہندی = ظ + ل + م = ظالم - ج + ن + گ = پتنگ = پتنگ = پتنگ = پتنگ
ب + ا + د + ل = بادل = ف + ر + ص + ت = فرصت = ث + ن + گ = ٹانگ = ٹانگ = ٹانگ = ٹانگ
ب + ر + س + ا = برسا = ق + ص + ص + ہ = قصہ = ج + ن + گ + ل = جنگل = جنگل = جنگل = جنگل
ت + و + ت + ا = توتا - ک + ش + ش = کوشش = ا + ب + ب + ا = آب = آب = آب = آب
تھ + و + ا = تھوڑا = ک + ل + ا = کیلا = ا + چھ + چھ + ا = اچھا = اچھا = اچھا = اچھا
ٹھ + ن + ڈ + ا = ٹھنڈا = ک + ہ + ا + ب = کہاں = کھو = کھو = کھو = کھو
ج + و + ت + ا = جوتا - ج + ی + ہ = کہیں = گ + ن + ن + ا = گنا = گنا = گنا = گنا
جھ + و + ا = جھوٹا = کھ + م + ل = کھنٹ = د + ل + ی = دلی = دلی = دلی = دلی
ج + و + ا = چڑیا = گ + ر + م + ی = گرمی = ک + و + و + ا = کوا = کوا = کوا = کوا
چھ + ت + ر + ی = چھتری = م + س + ج + د = مسجد - کھ + ٹ + ا = کھٹا = کھٹا = کھٹا = کھٹا
ذ + ر + ی + ا = دریا = م + ن + و + ر = مندر - م + چھ + چھ + ر = مچھر = مچھر = مچھر = مچھر

चार अक्षरों के वाक्य

ہندی سے اردو سیکھو	=	ہندی سے اردو سیکھو
عربی عرب کی زبان ہے	=	عربی عرب کی زبان ہے
یہاں آج بہت بارش ہوئی	=	یہاں آج بہت بارش ہوئی
چڑیا چوں چوں کر کے اڑ گئی	=	چڑیا چوں چوں کر کے اڑ گئی
سردی سے زکام اور بخار ہو گیا	=	سردی سے زکام اور بخار ہو گیا
گرمی میں پیاس بہت لگتی ہے	=	گرمی میں پیاس بہت لگتی ہے

छ: अक्षरों के शब्द

शायरी - ش + ا + ع + ر + ی = شاعری
 اورتا = ع + و + ر + ت + و + ا + ن = عورتوں
 अवलमद = ع + ق + ل + م + ن + و = غفلت
 फकीرو = ف + ق + ی + ر + و + ن = فقیروں
 کوربانی = ق + ر + ب + ا + ن + ی = قربانی
 مشاعر = ش + ا + ع + ر + ا = مشعر
 ملاقات = م + ل + ق + ا + ت = ملاقات
 ناکافی = ن + ا + ک + ا + ف + ی = ناکافی
 واہیات = و + ا + و + ی + ا + ت = واہیات
 ہزاروں = ہ + ز + ا + ر + و + ن = ہزاروں
 یادگار = ی + ا + و + گ + ا + ر = یادگار
 شرمندہ = ش + ر + م + ن + د + و = شرمندہ

آگاہ = ا + ا + ک + ا + ع + ا = آگاہ
 انتظار = ا + ن + ت + ط + ا + ر = انتظار
 اشتہار = ا + ش + ت + و + ا + ر = اشتہار
 اشتاق = ا + ت + ف + ا + ق = اشتاق
 انقلاب = ا + ن + ق + ل + ا + ب = انقلاب
 بارش = ب + ا + ر + ا + ش = بارش
 پاجامہ = پ + ا + ج + ا + م + و = پاجامہ
 پنجابی = پ + ن + ج + ا + ب + ی = پنجابی
 تنخواہ = ت + ن + خ + و + ا + و = تنخواہ
 دوسروں = د + و + س + ر + و + ن = دوسروں
 دروازہ = د + ر + و + ا + ز + و = دروازہ

پانچ اور छ: शब्दों के वाक्य

کل شام سے میرے دوست کی طبیعت ٹھیک نہیں ہے۔
 مشاعرے میں نئی شاعر اپنی اپنی غزلیں سنت ہیں۔
 محنت و امتحان میں کامیاب ہو جاؤ گے۔
 دیہاتوں میں عورتیں بہت محنتی ہوتی ہیں۔
 شادی کی قسمیں ہوتی ہیں۔
 شخص ترقی کرنے کی تمنا ہوتی ہے۔
 اگر آپ مجھ کو ملازمت دیں گے
 تو بھی آپ کی شہادت کا موقع نہ دوں گا۔

کل شام سے میرے دوست کی طبیعت ٹھیک نہیں ہے۔
 مشاعرے میں نئی شاعر اپنی اپنی غزلیں سنت ہیں۔
 محنت و امتحان میں کامیاب ہو جاؤ گے۔
 دیہاتوں میں عورتیں بہت محنتی ہوتی ہیں۔
 شادی کی قسمیں ہوتی ہیں۔
 شخص ترقی کرنے کی تمنا ہوتی ہے۔
 اگر آپ مجھ کو ملازمت دیں گے
 تو بھی آپ کی شہادت کا موقع نہ دوں گا۔

पाच अक्षरों की शब्दावली

दौड़ना = دوڑنا = ا+و+ڑ+ن+ا
 रुमाल = رومال = ر+و+م+ا+ل
 ज़िन्दगी - زندگی = ز+ن+د+گ+ی
 सामने = سامنے = س+ا+م+ن+ے
 सुनहरा = سنہرا = س+ن+ہ+ر+ا
 सफाई = صفائی = ص+ف+ا+ی
 जरूरत = ضرورت = ز+ر+و+ر+ت
 तबीअत = طبیعت = ط+ب+ی+ع+ت
 तरीके = طریقے = ط+ر+ی+ق+ے
 बैठता = بیٹھتا = ب+ै+ٹ+ت+ا
 तिजारत = تجارت = ت+ج+ا+ر+ت
 तहजीब = تہذیب = ت+ہ+ذ+ی+ب
 तरक्की = ترقی = ت+ر+ق+ق+ی
 तालीम = تعلیم = ت+ع+ل+ی+م
 तमन्ना = تمنا = ت+م+ن+ن+ا
 ठहरना = ٹھہرنا = ٹ+ہ+ر+ن+ا
 जवानी = جوانی = ج+و+ا+ن+ی
 जाड़ों = جاڑوں = ج+ا+ڑ+و+ں
 हकीकत = حقیقت = ح+ق+ق+ی+ت
 हुकूमत = حکومت = ح+क+و+م+ت
 खुशबू = خوشبو = خ+و+ش+ب+و
 खामोश = خاموش = خ+ا+م+و+ش

इजाजत = اجازت = ا+ج+ا+ز+ت
 अजनबी = اجنبی = ا+ج+ن+ب+ی
 अलफाज = الفاظ = ا+ل+ف+ا+ظ
 अधूरा = اُدھورا = ا+د+ھ+و+ر+ا
 अमरुद = امرؤد = ا+م+ر+و+د
 विलकुल = بالکل = व+ल+क+ल
 तुम्हारा = تمہارا = ت+م+ہ+ا+ر+ا
 पहचान = پہچان = پ+ہ+چ+ا+ن
 पत्तों = पत्तوں = प+त+त+و+ں
 इनायत = عنایت = ا+ن+ا+ی+ت
 गजलों = غزلوں = ग+ज+ल+ों
 फरयाद = فریاد = ف+र+ی+ا+د
 किसमें = قسمیں = क+ि+स+में
 कलाई = कलाई = क+ल+ा+ई
 लिखावट - لکھاوٹ = ل+ि+ख+ा+व+ट
 मुहब्बत = محبت = م+ु+ह+ب+ब+ت
 महसूस = محسوس = म+ह+स+ू+स
 मालूम = معلوم = म+ा+ल+ू+म
 नौकरी = نوکری = न+ौ+क+र+ी
 वजीफा = وظیفہ = व+ज+ी+फ+ा
 हंसता = ہنستا = ह+ं+स+त+ा
 यादे = یادیں = य+ा+द+े

उर्दू लिपि की कुछ और बातें जो सही

पढ़ने में सहायता देती हैं।

- (1) छोटी हे (ہ) जब किसी फारसी शब्द आदि के अन्त में आती है उस समय उसकी आवाज़ (स्वर) "ह" की नहीं होती बल्कि "आ" पढ़ी जाती है। ऐसा अधिकतर उन फारसी या अरबी के शब्दों में होता जो उर्दू में प्रचलित हैं। किसी स्थान या किसी गिनती के अन्त में भी अगर 'आ' का स्वर निफल रहा है तो उसको छोटी "हे" (ہ) पर समाप्त करते हैं, शब्द के अन्त में (ہ) का जोड़ना हो तो

(~) का चिन्ह जोड़ देते हैं।

फारसी के शब्द

बच्चा = بچہ = ہ + چ + ہ + ب

खाना घर, خانہ = خان + ہ + ن + ہ

परदा = پردہ = ہ + د + ہ + پ

सरमाया (सूजी) - سرمایہ = ہ + ی + ا + ر + م + س

रास्ता = راستہ = ہ + ت + س + ا + ر

मेकदा (मधुशाला) = مکدہ = ہ + د + ک + ع + م

जामेआ = جامعہ = ہ + ع + ا + م + ج

जूरभा (छूट) = جزمہ = ہ + م + ر + ج

फायदा = فائدہ = ہ + د + ع + ا + ف

दागारा (दूसरी बार) = دہ بارہ = ہ + र + ا + ا + ہ + د

वगैरा (आदि) - وغیرہ = ہ + ر + ع + غ + و

पटना = پٹنہ = ہ + ن + ت + پ

बारा = بارہ = ہ + ر + ا + ہ

स्थानों के नाम

कलकत्ता - کلکتہ = क + ल + क + त + त + ह = कलकत्ता

पटना = पटनह = प + ट + न + ह = पटना

आगरा = آگرہ = अ + ग + र + ह = आगरा

अमरोहा = امریہ = अ + म + र + ह = अमरोहा

गिनतियां

ग्यारा - گیارہ = ग + य + र + ह = ग्यारा

वारा = वारہ = व + र + ह = वारा

तेरा = تیرہ = त + र + ह = तेरा

चौदा = چودہ = च + द + ह = चौदा

पदरा = پندرہ = प + द + र + ह = पदरा

सौना = سوئے = स + न + ह = सौना

सत्तरा = سترہ = स + त + र + ह = सत्तरा

अठारह = اٹھارہ = अ + ठ + र + ह = अठारह

اپنی خیریت سے جلد مطلع کرو۔

اپنی خیریت سے جلد مطلع کرو۔

تمہارا خط ایک عرصے سے نہیں آیا۔

تمہارا خط ایک عرصے سے نہیں آیا۔

ہمارے ملک نے آزادی سن ۱۹۴۷ء میں حاصل کی۔

ہمارے ملک نے آزادی سن ۱۹۴۷ء میں حاصل کی۔

گیا وقت پھر ہاتھ آتا نہیں۔

گیا وقت پھر ہاتھ آتا نہیں۔

زندگی کا جو لمحہ بیت گیا وہ بیت گیا۔

زندگی کا جو لمحہ بیت گیا وہ بیت گیا۔

عقل مند لوگ وقت کی قیمت پہچانتے ہیں۔

عقل مند لوگ وقت کی قیمت پہچانتے ہیں۔

صبح سورج اپنی کرنیں پھیلاتا ہے۔

صبح سورج اپنی کرنیں پھیلاتا ہے۔

آزادی سے پہلے اردو کا رواج عام تھا۔

آزادی سے پہلے اردو کا رواج عام تھا۔

عدالت نے اُن کو قید یا مشقت کا حکم دیا۔

عدالت نے اُن کو قید یا مشقت کا حکم دیا۔

اتحاد میں طاقت ہے۔

اتحاد میں طاقت ہے۔

ترقی کرنا ہے تو محنت کرنا سیکھو۔

ترقی کرنا ہے تو محنت کرنا سیکھو۔

عورتوں کو مردوں کے برابر حقوق ماننا چاہیے۔

سات اور उस سے अधिक अक्षरों के शब्द

शादमानी = श + द + म + अ + न + यी = श + द + म + अ + न + यी

अगोती = अ + ग + ती = अ + ग + ती

सदृकचा = स + द + रू + क + च + अ = स + द + रू + क + च + अ

कहानियाँ = क + ह + अ + न + यी = क + ह + अ + न + यी

तिलिसमाती = त + ल + स + म + अ + ती = त + ल + स + म + अ + ती

हरतमाल = ह + र + त + म + अ + ल = ह + र + त + म + अ + ल

इवारते = इ + व + अ + र + ते = इ + व + अ + र + ते

अठखलियाँ = अ + ठ + ख + ल + यी = अ + ठ + ख + ल + यी

फौजदारी = फ + औ + ज + द + अ + री = फ + औ + ज + द + अ + री

कारखाना = क + आ + र + ख + आ + ना = क + आ + र + ख + आ + ना

गुनगुनाना = गु + न + गु + न + आ + ना = गु + न + गु + न + आ + ना

बादशाहत = ब + आ + द + श + अ + त = ब + आ + द + श + अ + त

मुबारकवादी = मु + ब + आ + र + क + वा + दी = मु + ब + आ + र + क + वा + दी

सामराजियत = स + आ + म + रा + ज + य + त = स + आ + म + रा + ज + य + त

नागहानी = ना + ग + हा + नी = ना + ग + हा + नी

जागीरदार = जा + गी + र + द + आ + र = जा + गी + र + द + आ + र

वरगलाना = व + र + ग + ला + ना = व + र + ग + ला + ना

जमींदार = ज + मी + न्दा + र = ज + मी + न्दा + र

हुनरमदी = हु + न + र + म + दी = हु + न + र + म + दी

- (3) कुछ अरबी के शब्द जिनका अलिफ पर अत होता है अगर उस अलिफ के ऊपर दो जबर का चिन्ह (=) लगा दिया जाता है तो उस समय अलिफ की आवाज के बजाय "न" की आवाज (सुर) निकलती जाती है जैसे

फौरन (तुरन्त) = فوراً = ف + و + ر + ا = इतिहास = ا + ت + ق + ن + ا + ت +
 मसलन - مثلاً = م + ث + ل + ا = यकीनन = ی + ق + ی + ن + ا =
 उमूमन - عموماً = ع + م + و + م + ا = खुगूसन - خصوصاً = خ + ص + و + ص + ا =
 कस दन - قصداً = ق + ص + د + ا =

- (4) कुछ फारसी के शब्दों में वाव (و) का प्रयोग अलिफ के स्थान पर होता है, वाव (و) अपना कोई सुर नहीं निकालता। इस

खुश = خوش

खुद = خود

खाहिश / ख्वाहिश - خواهش

ख्वाब - خواب

खुर्द (छोटा) - خور

खुशामद - خوشامد

- (5) हमजा (ء) की आवाज आधे अलिफ (ا) की होती है। जब यह आवाज किसी शब्द में ی, و या ا के साथ आती है तो हमजा लगा दिया जाता है, जैसे—

आये = آئے

आआ = آو

गये = گئے

जाओ = جاؤ

आई = آئی

सूई = سوائی

गई = گئی

रुई - روئی

लखनऊ - لکھنؤ

तेइस (23) - تیس

(2) (i) उर्दू में कुछ शब्द अरबी भाषा के ऐसे प्रयोग होते हैं जिनके प्रारम्भ में अलिफ (ا) लाम (ل) लगे होते हैं। अगर वे शब्द निम्नलिखित 14 अक्षरों से आरम्भ हो तो उन में लाम (ل) पढ़े नहीं जाते। इन 14 अक्षरों को "हुरूफ़ शमसी" (सूरज वंशी अक्षर) कहते हैं। वह यह हैं :-

ت-ث-د-ذ-ر-ز-س-ش-ص-ض-ط-ظ-ل-ن

नोट : अगर ا और ل वाला शब्द पहले के किसी शब्द से जुड़ा होता है तो ا और ل दोनों नहीं पढ़े जाते।

जैसे (उदाहरण) :-

अददुनया = الدنيا अशशम्स = الشمس अददहर = الدهر

दारुससलतनत = دار السلطنة निजामुद्दीन = نظام الدین

इन शब्दों में अलिफ और लाम (ا, ل) के सुरु पढ़े नहीं गये हैं।

(ii) और अगर ये अरबी के शब्द नीचे लिखे 14 अक्षरों से आरम्भ हों तो उन में "ल" (ل) पढ़ा नहीं जाता। अगर वह शब्द के आरम्भ में आता है तो पढ़ा जाता है। ये 14 अक्षर "हुरूफ़ कमरी" (चन्द्र वंशी) कहलाते हैं।

ی ہ و م ک ق ف غ ع
ये हे वाव मीम काफ काफ़ फे गैन ऐन

خ ح ج ب ا
खे हे जीम बे अलिफ

उदाहरण :-

अल अर्ज = الأرض अल कमर = القمر अल जबल = الجبل

बैतुल मुकददस = بیت المقدس शेखुल जामेआ = شيخ الجامعہ

नोट:- अगर ऐसे शब्दों में अलिफ और लाल (ا, ل) से पहले अलिफ (ا) या ये (ی) आये तो इस अलिफ या ये (ی) से पहले के अक्षर में जेर चिन्ह लगा कर पढ़ते हैं, जैसे -

बिज ज़रूर = بالضرورة बिलकुल = بأكمله फिलहाल = فی الحال

बिल उमूम = بالعموم फिल हकीकत = فی الحقیقت

وقت

دنیا میں ہر چیز خریدی جاسکتی ہے لیکن ایک چیز ایسی ہے جسے بڑی سے بڑی قیمت دے کر بھی نہیں خریدا جاسکتا اور وہ ہے وقت۔ جو وقت گزر گیا۔ اُسے واپس نہیں لایا جاسکتا۔ زندگی کا جو لمحہ بیت کیا وہ بیت کیا اسے پھر سے زندہ نہیں کیا جاسکتا۔ وہ صرف ماضی میں زندہ رہ سکتا ہے اُسے صاف یاد کیا جاسکتا ہے۔ اُس وقت سے اگر اچھا کام لیا ہے تو اُس کام پر خوش ہوا جاسکتا ہے۔ سے برباد کیا ہے تو اُس پر افسوس کیا جاسکتا ہے لیکن اسے واپس نہیں لایا جاسکتا۔

वक्त

दुनिया में हर चीज खरीदी जा सकती है लेकिन एक चीज ऐसी है जिस बड़ी से बड़ी कीमत देकर भी नहीं खरीदा जा सकता और जो है वही जा वक्त गुजर गया वो गुजर गया उसे वापस नहीं लाया जा सकता जिन्दगी का जो लम्हा बीत गया वो बीत गया उसे फिर से जिन्दा नहीं किया जा सकता। वो सिर्फ माजी में जिन्दा रह सकता है। उसे सिर्फ याद किया जा सकता है उस वक्त से अगर अच्छा काम लिया है तो उस काम पर खुश हुआ जा सकता है। उसे बरबाद किया है तो उस पर अफसोस किया जा सकता है लेकिन उसे वापस नहीं लाया जा सकता।

माजी = बीता हुआ समय

गद्यांश

मोर

बरसात का زمانा है—वह देखो, पेड़ के नीचे मोर नाच रहा है—वह इस वक्त बहुत ही खुश है। गर्दन उठा—उठा कर और चारों तरफ घूम—घूम कर बड़ी तरंग में नाच रहा है। उसके रंग—बिरंग के पर कैसे चमकदार हैं और किस कदर प्यारे मालूम होते हैं। उसकी आवाज भी बहुत प्यारी होती है। जब बोलता है तो सारा जंगल गूंज उठता है। मोर अपने रहने के लिए घोंसला नहीं बनाता। वो ज्यादा उड़ भी नहीं सकता, बस एक पेड़ से उड़कर दूसरे पेड़ पर पहुंच जाता है, हां जमीन पर वह बहुत तेज दौड़ता है। साल में एक बार उसके पर गिर जाते हैं और दूसरे पर निकल आते हैं। मोर के परों से लोग मोरछल और पंखे बनाते हैं।

आते हैं—मोर के पंखों से लोग मोरछल और पंखे बनाते हैं।

मोर

बरसात का जमाना है। वो देखो, पेड़ के नीचे मोर नाच रहा है। वह इस वक्त बहुत ही खुश है। गर्दन उठा—उठा कर और चारों तरफ घूम—घूम कर बड़ी तरंग में नाच रहा है। उसके रंग—बिरंग के पर कैसे चमकदार हैं और किस कदर प्यारे मालूम होते हैं। उसकी आवाज भी बहुत प्यारी होती है। जब बोलता है तो सारा जंगल गूंज उठता है। मोर अपने रहने के लिए घोंसला नहीं बनाता। वो ज्यादा उड़ भी नहीं सकता, बस एक पेड़ से उड़कर दूसरे पेड़ पर पहुंच जाता है, हां जमीन पर वह बहुत तेज दौड़ता है। साल में एक बार उसके पर गिर जाते हैं और दूसरे पर निकल आते हैं। मोर के परों से लोग मोरछल और पंखे बनाते हैं।

नोट:— पहले ऊपर लिखे उर्दू के लेख को खुद (स्वयं) पढ़ने की कोशिश कीजिए, उसके बाद हिन्दी लेख देखिये।

کविता

بہار کے دن

آیا ہے بہار کا زمانہ
 کلیاں کیا کیا چٹک رہی ہیں
 ہلکی ہلکی یہ اُن کی خوشبو
 چڑیاں گاتی ہیں گیت پیارے
 کوئیل ہر اک ہے کیسی پیاری
 کتنی راحت فزا ہوا ہے
 خوش خوش ہر ایک آدمی ہے
 یہ صبح کا دل فریب منظر
 یہ رات و چاندنی کا عالم
 تین دن چپ چاندنی ہے
 ہر اک میں منہ کس قدر ہے
 تلوں کے نکھار کا زمانہ
 ساری ریشمیں مہلک رہی ہیں
 چٹیلی ہوئی ہے چمن میں ہر سو
 سنتے ہیں چمن میں پھول سارے
 بڑی میں جھٹک رہی ہے سرنی
 گویا جنت کا در کھلا ہے
 ہر شے میں بلا کی دل کشی ہے
 یہ شام کا حسن رُوح پرور
 اللہ رے، بے خودی کا عالم
 چادر اک ٹور کی تھی ہے
 سب پر ہی بہار کا اثر ہے

بہار کے دن

آیا ہے بہار کا زمانہ
 کلیاں کیا کیا چٹک رہی ہے
 ہلکی-ہلکی یہ ان کی خوشبو
 چڑیاں گاتی ہیں گیت پیارے
 کوئیل ہر ایک ہے کیسی پیاری
 کتنی راحت فزا ہوا ہے
 خوش خوش ہر ایک آدمی ہے
 یہ صبح کا دل فریب منظر
 یہ رات و چاندنی کا عالم
 تین دن چپ چاندنی ہے
 ہر اک میں منہ کس قدر ہے

کلیاں کے نیلوار کا زمانہ
 ساری ریشمیں مہلک رہی ہے
 فٹیلی ہوئی ہے چمن میں ہر سو
 سناتے ہیں چمن میں پھول سارے
 بڑی میں جھٹک رہی ہے سرنی
 گویا جنت کا در کھلا ہے
 ہر شے میں بلا کی دل کشی ہے
 یہ شام کا حسن رُوح پرور
 اللہ رے، بے خودی کا عالم
 چادر ایک ٹور کی تھی ہے
 سب پر ہی بہار کا اثر ہے

نفاق

ایک ضعیف آدمی کے بہت سے بیٹے تھے جو آپس میں اکثر لڑتے رہتے تھے۔ ضعیف باپ نے بہت سی تدبیریں کیں لیکن کوئی کارآمد نہ ہوئی۔ آخر کار اُس نے یہ حکمت کی کہ اپنے سب لڑکوں سے کہا کہ میرے سامنے چھوٹی چھوٹی کڑیوں کا ایک گٹھرا لاؤ۔ جب وہ آگیا اُس نے حکم دیا کہ تم سب ایک کے بعد ایک اپنی پوری طاقت کے ساتھ کوشش کرو اور دیکھو کہ تم میں سے اسے کوئی توڑ سکتا ہے۔ اُن سمجھوں نے کوشش کی لیکن توڑ نہ سکے۔ بعد ازاں اُس بزرگ نے حکم دیا کہ گٹھر کھول دیا جائے اور ایک ایک لکڑی اپنے ہر ایک بیٹے کو دے کر فرمایا کہ اب توڑنے کی کوشش کرو۔ ہر ایک نے اُن کو بہ آسانی توڑ لیا۔ تو باپ نے اُن کی طرف مخاطب ہو کر یہ کہا: ”اے بیٹو! اتفاق کی قوت پر غور کرو۔ اگر تم اسی طرح سے محبت کے ساتھ مل جل کر رہو گے تو کسی انسان کی جرأت نہ ہوگی کہ تم کو نقصان پہنچا سکے۔ اور اگر آپس میں لڑو گے تو ایک ایک کر کے سب تباہ ہو جاؤ گے کیونکہ نفاق آپس کے زور کو گھٹا دیتا ہے۔“

निफाक

एक जईफ़ आदमी के बहुत से बेटे थे जो आपस में अक्सर लड़ते रहते थे। जईफ़ बाप ने बहुत सी तदबीरे की लेकिन कोई कारामद न हुई। आखिरकार उसने यह हिकमत की कि अपने सब लडको से कहा कि मेरे सामने छोटी-छोटी लकड़ियों का एक गट्ठर लाओ। जब वो आ गया उसने हुक्म दिया कि तुम सब एक के बाद एक अपनी पूरी ताकत के साथ कोशिश करो और देखो कि तुम में से कोई इसे तोड़ सकता है। उन सभी ने कोशिश की लेकिन तोड़ न सके। बाद अजां उस बुजुर्ग ने हुक्म दिया कि गट्ठर खोल दिया जाय और एक-एक लकड़ी अपने हर एक बेटे को देकर फरमाया कि अब तोड़ने की कोशिश करो। हर एक ने उनको बआसानी तोड़ लिया तो बाप ने उनकी तरफ़ मुखातिब होकर यह कहा—“ऐ बेटो, इत्तफ़ाक की कुव्वत पर गौर करो, अगर तुम इसी तरह से मुहब्बत के साथ मिलजुल कर रहोगे तो किरसी इन्सान की जुरअत न होगी कि तुमको नुक़सान पहुंचा सके और अगर आपस में लड़ोगे तो एक-एक करके सब तबाह हो जाओगे—क्योकि निफ़ाक आपस के जोर को घटा देता है।

बाद अज़ां – उसके बाद

निफाक = बैर, दुश्मनी

غالب کی غزل

نکتہ چیں ہے غمِ دل اُس کو سنائے نہ بنے کیا بنے بات جہاں بات بنائے نہ بنے
میں بلاتا تو ہوں اُس کو مگر اے جذبہٴ دل اُس پہ بن جائے کچھ ایسی کہ بن آئے نہ بنے
اس نزاکت کا ہوا ہو وہ بھلے ہیں تو کیا ہاتھ آئیں تو انھیں ہاتھ لگائے نہ بنے
بوجھ وہ سر سے گرا ہے کہ اٹھائے نہ اٹھے کام وہ آن پڑا ہے کہ بنائے نہ بنے
عشق پر زور نہیں، ہے یہ وہ آتشِ غالب
کہ لگائے نہ لگے اور بجھائے نہ بنے

گالیب کی گزل

- (1) نुकتا चीं है, ग़मे दिल उसको सुनाये न बने।
क्या बने बात जहां बात बनाये न बने।
- (2) मैं बुलाता तो हूं उसको मगर ऐ जज़ब-ए-दिल
उस पे बन जाये कुछ ऐसी कि बिन आये न बने।
- (3) इस नज़ाकत का बुरा हो वो भले हैं तो क्या
हाथ आयें तो उन्हें हाथ लगाये न बने।
- (4) बोझ वो सिर से गिरा है कि उठाये ने उठे
काम वो आन पड़ा है कि बनाये ने बने।
- (5) इश्क़ पर जोर नहीं, है ये वो आतश, ग़ालिब
कि लगाए न लगे और बुझाये न बने।

نوٹ:- پہلی پंکت میں (غمِ دل = غمِ دل) میں "م" (م) کے نیچے زور (/) چنھ کا پریوگ وہی "نجاکت" ہے جو "نران-ع-ہندی" کے نوٹ میں بتائی گئی ہے۔

ترانہ ہندی

سارے جہاں سے اچھا ہندوستان ہمارا
ہم بلبلیں ہیں اس کی، یہ گلستاں ہمارا
پرست وہ سب سے اونچا ہم سلاہ آسماں کا
وہ سنتری ہمارا وہ پاسباں ہمارا
مذہب نہیں سکھاتا آپس میں بیر رکھنا
ہندی ہیں ہم وطن ہے ہندوستان ہمارا
یونان و مصر و روم سب مٹ گئے جہاں سے
اب تک مگر ہے باقی نام و نشاں ہمارا
کچھ بات ہے کہ ہستی مٹی نہیں ہماری
صدیوں رہا ہے دشمن دورِ زماں ہمارا

اقبال کوئی محرم اپنا نہیں جہاں میں
معلوم کیا کسی کو دردِ نہاں ہمارا

ترانہ-۵-ہندی

سارے جہاں سے اچھا ہندوستان ہمارا
ہم بولبولے ہیں اس کی، یہ گلستاں ہمارا
پرست وہ سب سے اونچا ہم سلاہ آسماں کا
وہ سنتری ہمارا وہ پاسباں ہمارا
مذہب نہیں سکھاتا آپس میں بیر رکھنا
ہندی ہیں ہم وطن ہے ہندوستان ہمارا
یونان و مصر و روم سب مٹ گئے جہاں سے
اب تک مگر ہے باقی نام و نشاں ہمارا
کچھ بات ہے کہ ہستی مٹی نہیں ہماری
صدیوں رہا ہے دشمن دورِ زماں ہمارا

سارے جہاں سے اچھا ہندوستان ہمارا
ہم بولبولے ہیں اس کی، یہ گلستاں ہمارا
پرست وہ سب سے اونچا ہم سلاہ آسماں کا
وہ سنتری ہمارا وہ پاسباں ہمارا
مذہب نہیں سکھاتا آپس میں بیر رکھنا
ہندی ہیں ہم وطن ہے ہندوستان ہمارا
یونان و مصر و روم سب مٹ گئے جہاں سے
اب تک مگر ہے باقی نام و نشاں ہمارا
کچھ بات ہے کہ ہستی مٹی نہیں ہماری
صدیوں رہا ہے دشمن دورِ زماں ہمارا

نوٹ:- اس کविता میں देखو कि दो शब्दों का जोड़ दो जगह लाया गया है
पहले शब्द में "रे" (ر) के नीचे और दूसरे शब्द में "दाल" (و) के नीचे "जेर"
(-) का चिन्ह लगा दिया गया है। ऐसा दो फ़ारसी के शब्दों में होता है और इसे
"इज़ाफ़त" कहते हैं। यह 'का, की, के, का' संबंध बताता है, अर्थात् "समय का
चक्कर" और "अपने अन्दर की दाह"। फ़ारसी में "का", को, के, का प्रयोग नहीं
होता। हां, ऐसे जोड़ वाले दो शब्दों में से पहले के आखिरी अक्षर के नीचे "जेर"
(-) का चिन्ह लगा देते हैं। आखिरी अक्षर 'ह' (ه) हो तो उस पर हमज़ा (ـ) लगाते
हैं जैसे तरानये हिन्दी, पाये यार

पाये यार (दोस्त का पांव)

उर्दू गिनतियां

1000	100	10	9	8	7	6	5	4	3	2	1
9000	900	90	६	८	७	६	५	४	३	२	१

नोट :- आखिर में यह बात याद रखिये कि उर्दू लिखावट में शब्दों की पहचान पर ज्यादा जोर दिया जाता है चिन्ह पर नहीं। चिन्ह शुरू में शब्द को सीखने के लिये तो आवश्यक हैं लेकिन जब आप वह शब्द अच्छी तरह पहचान जायें तो फिर चिन्ह लगाने की जरूरत नहीं पड़ती, जैसे शब्द "ग़लत" (غلط) में "ग" और "ल" पर ज़बर का चिन्ह है लेकिन एक दफ़ा जब आप जान गये कि غلط ऐसे लिखा जाता है तो फिर उसे आप "ग़लत" (غلط) के सिवा और कुछ नहीं पढ़ेंगे।

ہندی سے اردو سیکھئے



ڈاکٹر نور الحسن ہاشمی

اُتر پردیش اردو اکادمی
لکھنؤ